

ज्ञातिकापीणि M. 11, 187. पितृमेधम् 5, 65. आहम् 3, 222. धर्मम् 2, 229. 235. स्नानम् 4, 208. हिसाम् 5, 43. 11, 222. विवादम् 4, 180. गुरुवदतिम् 2, 207. प्रतिश्रवणासंभाषे 195. 8, 361. सुयुद्धम् 7, 176. PĀṆĀT. III, 12, 15. प्राणयात्राम् 116, 18. मन्त्रम् 1, 61. मानम् Hit. II, 22. पत्नम् MBh. 3, 869. आहारमेकपणेन एकपर्णा समाचरत् *nährte sich von einem einzigen Blatte* HARIV. 945. राज्ञेन्द्रत्वम् 8992. fg. कष्टानि तपोसि मरुति दानानि दारुणानि युद्धानि भीमानि समुद्रलङ्घनादीनि DAÇAK. in BENF. Chr. 183, 1. हरादावसथान्मूत्रं हरात्पादावसेचनम् । उच्छिष्टान् निषेकं च हरादेव समाचरेत् ॥ *fern hinthun* M. 4, 151. — Vgl. समाचर u. s. w.

— अनुसमा *vollziehen, vollbringen*: कर्माणि BṛĀg. P. 4, 22, 53.

— उद् 1) *aufgehen, hervorgehen, sich erheben*; von der Sonne RV. 4, 25, 4. 7, 66, 16. 10, 37, 5. VS. 36, 24. AV. 11, 4, 21. अङ्गारा श्यानाः RV. 7, 3, 3. 8, 40, 8. ऊर्ध्वं बिन्दुहृदचरत् AV. 10, 10, 19. वाष्पः, धूम उच्चरति P. 1, 3, 53, Sch. Vop. 23, 45. यैषा हृदयाहर्षं नाड्युच्चरति ÇAT. Br. 14, 6, 44, 3. सौदामिनीमुच्चरती यैवैव MBh. 3, 10088. *sich erheben so v. a. ertönen*: वाक् ÇAT. Br. 14, 7, 4, 5. दिव्यस्तूर्यधनिहृदचरत् RAGH. 16, 87, 9, 73. अश्वत्थरोस्तस्माडुच्चार सरस्वती KATHAS. 20, 32. VID. 114. — 2) *in die Höhe schnellen* (vom Bogen): विस्फूर्जितैर्यनुष उच्चरतः BṛĀg. P. 2, 7, 25. — 3) *aus sich hervorgehen*: स यथार्पावभिस्तनुनोच्चरेत् *wie die Spinne mittelst des Fadens ihren Inhalt aus sich entlässt* ÇAT. Br. 14, 5, 4, 23. — 4) *den Leib ausleeren*: तिरस्कृत्योच्चरेत्काष्ठलोष्ठपत्रतृणादिना M. 4, 49. उच्चरित n. die Excremente BṛĀg. P. 5, 5, 32. — 5) *von sich geben, entlassen, aussprechen*: ददाति सर्वमीशानः पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरन् MBh. 3, 917, 3. 1139. 5, 2751. वाग्वचनमुच्चरति TATTIVAS. 14, 29. प्रश्नानुच्चरितान्य व्याहरिष्यसि केन्मम MBh. 3, 12466. जगति राम इत्ययं शब्द उच्चरित एव मामगात् RAGH. 11, 73. दशवारमुच्चरितो गोशब्दः Sch. zu GĀIM. 1, 2, 19. SĀH. D. 9, 1. — 6) *med. verlassen*: मधोनि दिवमुच्चरमाणो NAISH. 5, 48. पथः (acc.) नीवा वृन्दैरुदचरत BHAṬṬ. 8, 31. — 7) *sich gegen Jmd versehen, untreu sein dem Gatten*: पत्न्यः पतीनुच्चरत पतीश्च पतयस्तथा MBh. 16, 43. *übertreten, zuwiderhandeln*; *med.*: धर्मम्, गुरुवचनमुच्चरेत् P. 1, 3, 53, Sch. Vop. 23, 45. Nach P. erscheint चर mit उद् als trans. schlechtweg im med. — *caus.* 1) *den Leib ausleeren*: उच्चरित (kann auch auf उच्चार zurückgeführt werden) *der eine Ausleerung gehabt hat* SUÇA. 2, 463, 15. — 2) (Laute) *entlassen, ertönen lassen, verkünden, aussprechen*: मधुरा वाणीम् MBh. 1, 7255. गिरम् 3, 1691. वाक्यम् 10950. यज्ञधाम्नां साधो च गद्यानां चैव सर्वशः । आसीदुच्चार्यमाणानां निस्वनो हृदयंगमः ॥ 966. श्लोकारेण — सम्यगुच्चारितेन 8190. स्वरादि दुष्टमसकृदुच्चारयति P. 1, 3, 71, Sch. — LĪṬ. 6, 10, 18. MBh. 3, 13653. 13, 4045. R. 2, 91, 27. MĀKĀH. 44, 15. RĀGA-TAR. 5, 475. BṛĀg. P. 3, 21, 34. Sch. zu GĀIM. 1, 2, 17, 19. Sch. zu P. 1, 1, 8. 8, 1, 3. Vop. 1, 2. SĀH. D. 9, 1. — Vgl. उच्चार fg.

— अभ्युद् *aufgehen über, von der Sonne*: भोजिष्मं अभ्युच्चरा सदा RV. 8, 25, 21.

— प्रोद् *ertönen lassen*: प्रोच्चरत्प्रणवं सदा HARIV. 14694. — *caus.* *Töne von sich geben*: यावन्नास्य प्रोच्चरितस्य दृष्टिगोचरे गच्छामि *der diese Töne von sich giebt* PĀṆĀT. 21, 3.

— प्रत्युद् *caus.* *Jmd aufregen* MBh. 8, 3553.

— व्युद् 1) *nach verschiedenen Richtungen hervorgehen*: यथाग्नेः लुङ्गा विष्फुलिङ्गा व्युच्चरति ÇAT. Br. 14, 5, 4, 23. — 2) *untreu dem Gatten*

(acc.) *sein*: तासौ व्युच्चरमाणानाम् — पतीन् MBh. 1, 4720. व्युच्चरत्याः पतिं नार्याः, भार्या तथा व्युच्चरतः 4732. fg. व्युच्चरंश्च मरुदोषं नर एवापराध्यति 12, 9518. Ehebruch treiben mit (instr.): व्युच्चरत्यापि दुःशीला दसिः पशुभिरिव च 3, 12868.

— अनुव्युद् *nach einem Andern hervorgehen* ÇAT. Br. 9, 4, 3, 6.

— समुद् *hervorgehen* Nir. 6, 11.

— उप, काममुपचरयै *ved. P. 3, 4, 9, Sch. 1) herbeikommen, sich nähern, hinzutreten zu* (acc.): अन्नवर्त्तरीरूपं नो दुर्गश्च RV. 7, 46, 2. ÇAT. Br. 1, 9, 4, 8. यः पशुं पुरस्तात्प्रत्यक्षमुपचरति TS. 5, 7, 6, 1. स तानुपचरन् R. 5, 64, 5. — 2) *hinzutreten um zu bedienen, Jmd an die Hand gehen, bedienen, aufwarten*; mit dem acc. der Person: स यो ह्येनं शोभनेनोपचरति ÇAT. Br. 3, 3, 3, 3. मदतीभिः 4, 3, 10. यथा चोपचरेदेनम् M. 4, 254. MBh. 1, 4299. 3, 14667. R. 1, 9, 69. उपचीर्णो गुरुर्मिथ्या भवता MBh. 7, 9062. सममुपचर भद्रे सुप्रियं वाप्रियं वा (zu einem öffentlichen Mädchen gesprochen) MĀKĀH. 13, 16. 120, 23. यत्ताडुपचर्यताम् ÇAK. 43, 12. RAGH. 5, 62. KUMĀRAS. 1, 61. DAÇAK. 59, 8. BṛĀg. P. 4, 28, 43. विद्याधरीमिरुपचीर्णवपुः 3, 23, 38. स मोचयित्वा तानश्चानुपचर्य च शास्त्रतः MBh. 3, 2884. भर्तारम् — उपाचरत् । उपयिः श्वेतकाकायैः 1, 1879. तत्र देवतकन्याभिरासनेनापचर्यते 13, 5284. कृत्रिमसंविधाभिः RAGH. 14, 17. स्नानेन भोजनैर्वस्त्रैः VID. 252. मित्रवेनोपचरितस्य DAÇAK. in BENF. Chr. 199, 21. न युक्तं भवता कृमन्तेनोपचरितम् MBh. 1, 769. अन्तेनोपचीर्णो हि कन्यादेव 4, 104. निष्कृत्योपचरन्वध्यः 3, 467. med. 13, 3037. 3487. तैरुपचर्यमाणा कन्युः समेतान्धृतराष्ट्रमुत्तान् unterstützt 5, 21. उपचरित = वरिवसित u. s. w. AK. 3, 2, 51. — 3) *sich an Etwas machen, unternehmen, angreifen*: उत्तरतो यज्ञमुपचरिष्यामः ÇAT. Br. 4, 6, 6, 1. यदा वा अन्नं पच्यते ऽथ तत्सृणोपचरति 7, 2, 2, 5. यो वा अयथादेवतं यज्ञमुपचरति TS. 3, 1, 6, 1. — 4) *behandeln* (medic.): उपद्रवोश्च यथास्वमुपचरत् (vgl. u. उपा) SUÇA. 2, 48, 18. mit dem acc. der Person: विविधैः शीतोपायैः — उपचर्यमाणाश्चिरात्कर्यचित्सचेतना बभूव PĀṆĀT. 43, 10. — 5) *pass. uneigentlich —, metaphorisch gebraucht sein, — zugeschrieben werden*: कालो ऽयं द्विपराध्याख्यो निमेष (loc.) उपचर्यते । अख्याकृतस्यानतस्य अनादेर्जगदात्मनः ॥ BṛĀg. P. 3, 11, 37. यथा लोके स्वशक्तिषु योधिषु वर्तमानौ जयपराजयौ राज्ञि उपचर्यते *wie Sieg und Niederlage in der Welt uneigentlich dem Könige zugeschrieben werden, indem dieselben eigentlich seine Kämpfer treffen*, Sch. zu SĀMĀHJAK. 21 (S. 78). 62 (S. 177). विभक्ता धातर इत्यत्र च धनस्य यद्धिभक्तिवं तद्वात्पूषचर्यते MALLIN. zu KIR. 1, 1. SĀH. D. 8, 7. 30, 19. Hierher gehört wohl auch die Stelle: तेनोपचर्यते राज्ञः । याम्योत्तरा शशिगतिर्गणिते ऽप्युपचर्यते तेन VARĀH. BRH. S. 5, 15. — Vgl. उपचर fg., उपचर्य, उपचार fg., उपचार्य.

— दुस् *übel an Jmd (acc.) handeln, dem Gatten untreu sein*: कामवक्तव्यहृदया भर्तारं दुश्चरति याः R. 3, 2, 25.

— निस् *hervorkommen, zum Vorschein kommen, hervorgehen, hinausgehen, sich erheben* (von Lauten): इतश्चेतश्च निश्चेरुहृष्टाः सर्वे युयुत्सवः HARIV. 12529. गर्भौ अप्रसाम्यस्थान्महान्कविर्निश्चरति RV. 1, 95, 4. न च स्म किंचिच्छक्नोति भूतं निश्चरितुं ततः (वनात्) MBh. 1, 8235. 8311. मुखाविश्वरुचिर्षः HARIV. 12530. तोयदेषु यथा राज्ञाजमाना शतरुदाः । शराश्च निशिताः पीता निश्चरति स्म संपुगे ॥ MBh. 6, 4543. यतो यतो निश्चरति मनश्चक्षलमस्थिरम् BHAG. 6, 26. ततः सूर्यान्निश्चरितो कर्पाः शुभ्रा-